

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 3, मानवता की उत्पत्ति, पाँच दृष्टिकोण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र संख्या तीन है, मानवता की उत्पत्ति, पाँच दृष्टिकोण।

हम मानवता और पाप के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

पहले वाले के साथ काम करते हुए, कुछ परिचयात्मक कार्य करने के बाद, अब हम मानवजाति की उत्पत्ति की ओर बढ़ते हैं। उसके अंतर्गत मानवता की उत्पत्ति के बारे में विचार हैं, फिर दूसरे, आदम और हव्वा की स्थिति। तीसरा, क्या आदम को पहले से मौजूद किसी प्राणी से बनाया गया था? मनुष्य की उत्पत्ति के अंतर्गत ये हमारे तीन उपविषय हैं।

मैं अभी भी अपने आधार के रूप में मिलार्ड एरिक्सन के *ईसाई धर्मशास्त्र का उपयोग करता हूँ*। मनुष्य की उत्पत्ति, मानवता की उत्पत्ति के बारे में विचार। मिलार्ड एरिक्सन ने अपने ईसाई धर्मशास्त्र में हमारी उत्पत्ति के बारे में पाँच दृष्टिकोण सूचीबद्ध किए हैं।

पाँचों दृष्टिकोणों का संक्षिप्त सारांश हमें मानव जाति की शुरुआत की जाँच करने में मदद करेगा। पाँच दृष्टिकोण प्रकृतिवादी विकास और फ़िएट सृजनवाद हैं; ये एरिक्सन के शब्द हैं, देववादी विकास, ईश्वरवादी विकास और प्रगतिशील सृजनवाद। जैसा कि नाम से पता चलता है, दो दृष्टिकोण सृजनवादी दृष्टिकोण हैं, और तीन विकासवादी दृष्टिकोण हैं।

सबसे पहले, प्राकृतिक विकास। प्राकृतिक विकास प्रकृति की आसन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से मानवता सहित सभी प्रकार के जीवन का हिसाब लगाने का एक प्रयास है। प्राकृतिक विकास के अनुसार अलौकिकता को स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।

अर्थात्, प्राकृतिक विकास अलौकिक विकास के विरुद्ध है। एरिक्सन के हवाले से फ़िएट क्रिएशनिज्म का मानना है कि ईश्वर ने प्रत्यक्ष कार्य करके, जो कुछ भी है, उसे लगभग तुरंत अस्तित्व में लाया। इस दृष्टिकोण में ईश्वर की प्रत्यक्ष क्रिया और सृष्टि की समय अवधि की लघुता दोनों पर जोर दिया गया है।

जॉन व्हिटकॉम्ब की द अर्ली अर्थ इस स्थिति का बचाव करती है। आज एक और महत्वपूर्ण नाम केन हैम का है। अधिवक्ताओं का दावा है कि वे सृष्टि से संबंधित बाइबिल के आंकड़ों की व्याख्या करने का सबसे अच्छा काम करते हैं।

मैं इनका कुछ मूल्यांकन करूँगा, लेकिन फ़िएट क्रिएशनिज्म निश्चित रूप से एक क्रिएशनिस्ट दृष्टिकोण है। प्राकृतिक विकास की तरह ही देववादी विकास भी एक और विकासवादी मॉडल है। देववादी विकास वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार ईश्वर ने सृजन प्रक्रिया की योजना बनाई और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसने विकास का उपयोग किया।

ईश्वर ने जब पहले रूपों का निर्माण किया, तो उसने खुद को विकास प्रक्रिया से अलग कर लिया। एरिक्सन ने इस दृष्टिकोण के ईश्वर को व्यंग्यात्मक रूप से क्रिएटर एमेरिटस, सेवानिवृत्त क्रिएटर के रूप में संदर्भित किया। बेशक, देववाद ने बिल्कुल यही कहा।

भगवान ने दुनिया को अपने आप चलने के लिए प्रक्रियाओं का निर्माण किया और फिर उसमें निर्माण किया। घड़ी की छवि का अक्सर उपयोग किया जाता है। भगवान ने घड़ी को घुमाया, और फिर यह अपने आप चलने लगी।

ईश्वरवादी विकास, प्रकृतिवादी और ईश्वरवादी विकास की तरह, एक विकासवादी दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण ईश्वरवादी विकास के समान है, और फिर भी दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। ईश्वरवादी विकास के अनुसार, ईश्वर न केवल रचनात्मक प्रक्रिया की शुरुआत में बल्कि उसके बाद के प्रमुख बिंदुओं पर भी शामिल है।

मनुष्य के निर्माण के लिए ईश्वर प्रत्यक्ष और अलौकिक रूप से जिम्मेदार था। जब ईश्वर ने मनुष्य को बनाया तो उसने पहले से मौजूद प्राणी का इस्तेमाल किया। ईश्वर ने एक मानव आत्मा बनाई और उसे एक उच्च प्राइमेट में डाल दिया।

ईश्वरवादी विकास ईश्वरवादी विकास से कहीं ज्यादा ईश्वर को शामिल करता है, जो सिर्फ उसे प्रक्रिया आरंभ करने वाला मानता है, और निश्चित रूप से दोनों ही प्राकृतिक विकास से कहीं ज्यादा हैं, जो कि, जैसा कि हमने कहा है, अलौकिक विकास विरोधी है। फिर भी, ईश्वरवादी विकास अभी भी हमारी उत्पत्ति का एक विकासवादी दृष्टिकोण है। प्रगतिशील सृजनवाद, फ़िएट सृजनवाद की तरह, एक सृजनवादी दृष्टिकोण है।

मैंने पहले कहा था कि ये टैग एरिक्सन के टैग हैं। मेरे कुछ दोस्त अपने विचारों को फ़िएट क्रिएशनिज़्म के बजाय यंग अर्थ क्रिएशनिज़्म कहना ज्यादा पसंद करेंगे, और इन टैग से मेरा कोई अपमानजनक मतलब नहीं है। मैं सिर्फ एरिक्सन के लेबल का इस्तेमाल कर रहा हूँ।

प्रगतिशील सृजनवाद, उद्धारण, ईश्वर के रचनात्मक कार्य को नए सिरे से, एकदम नए, रचनात्मक कार्यों और एक आसन्न या प्रक्रियात्मक संचालन की श्रृंखला के संयोजन के रूप में देखता है, उद्धारण बंद करें। समय के विभिन्न बिंदुओं पर, ईश्वर ने पहले से मौजूद जीवन का उपयोग किए बिना नए जीवों का निर्माण किया। सृजन के इन विशेष कार्यों के बीच, विकासवादी विकास हुआ।

प्रगतिशील सृष्टिवादियों का मानना है कि ईश्वर ने एक विशेष कार्य में धरती की धूल से मनुष्य का निर्माण किया। जब उन्होंने पहला मनुष्य बनाया तो उन्होंने पहले से मौजूद प्राइमेट का उपयोग नहीं किया। यह दृष्टिकोण मैक्रो-इवोल्यूशन, बड़े पैमाने पर विकास को अस्वीकार करता है जो हर उस चीज़ को शामिल करता है जो मौजूद है, लेकिन माइक्रो-इवोल्यूशन को स्वीकार करता है, यानी एक तरह के भीतर, लेकिन अंतर-प्रकार नहीं, एक तरह के प्राणी से दूसरे अलग तरह के प्राणी में विकास नहीं।

फ़िएट या युवा पृथ्वी सृजनवाद की तरह, प्रगतिशील सृजनवाद एक सृजनवादी दृष्टिकोण है। जाहिर है, मैं यह मान रहा हूँ कि विकासवादी दृष्टिकोण और सृजनवादी दृष्टिकोण के बीच का अंतर पृथ्वी की आयु नहीं है क्योंकि फ़िएट और प्रगतिशील सृजनवाद दोनों इस पर असहमत हैं, लेकिन यह हमारे पहले माता-पिता की विशेष रचना है जो सृजनवादी या विकासवादी दृष्टिकोण के बीच अंतर करती है। मूल्यांकन : हर कोई इससे खुश नहीं होगा, लेकिन मैं आपको अपना मूल्यांकन दूंगा।

मेरे लिए यह स्पष्ट है कि दृष्टिकोण ए और सी बाइबिल धर्म के साथ असंगत हैं। प्राकृतिक विकास और ईश्वरवादी विकास दोनों ही शास्त्रों के साथ असंगत हैं। प्राकृतिक विकास असंगत है, क्योंकि यह ईश्वर के स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता होने से इनकार करता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र की पहली आयत घोषित करती है।

देववादी विकासवाद ईश्वर के सृष्टिकर्ता होने से इनकार नहीं करता, लेकिन यह उसके विधान के कार्य से इनकार करता है। ईश्वर के कार्य हैं सृजन, विधान, मुक्ति और पूर्णता। इनमें से किसी एक को स्वीकार करना और अन्य को नकारना किसी व्यक्ति के धर्मशास्त्र को बाइबल के अनुसार नहीं बनाता।

इसलिए, मैं प्राकृतिक विकास और ईश्वरवादी विकास दोनों को खारिज कर रहा हूँ। मैं ईश्वरवादी विकास से खुश नहीं हूँ, लेकिन यह एक तथ्य है। बाइबल पर विश्वास करने वाले ईमानदार ईसाईयों ने फ़िएट सृष्टिवाद, ईश्वरवादी विकास और प्रगतिशील सृष्टिवाद को माना है।

आप कहते हैं, अच्छा, आप ईमानदारी से बाइबल पर विश्वास करने को कैसे परिभाषित करते हैं? कोई व्यक्ति जो यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मानता है, ठीक है? आप देखेंगे कि मैं थोड़े समय में ईश्वरवादी विकासवाद से असहमत हूँ। आप इसे देखेंगे। लेकिन अभी के लिए, कुछ लोग दृष्टिकोण बी, युवा पृथ्वी या फ़िएट क्रिएशनिज़्म को वैज्ञानिक और धार्मिक आधार पर अस्थिर मानते हैं।

उनका दावा है कि यह विज्ञान को गंभीरता से नहीं लेता है और ईश्वर की सत्यता पर संदेह करता है। आपका क्या मतलब है कि विज्ञान को गंभीरता से नहीं लिया जाता है? डैनियल वंडरली एक ईसाई कॉलेज में प्रोफेसर थे, और उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि उन्होंने कार्बन-14 रेडियोधर्मी डेटिंग को छोड़कर, विभिन्न वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करके पृथ्वी की आयु का अध्ययन किया था। और वह पृथ्वी की बहुत पुरानी आयु, जैसे पाँच अरब वर्ष, कुछ ऐसा ही बताते रहे।

आखिरकार उसे नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि यह उसके संस्थान में स्वीकार्य नहीं था, जिसमें युवा पृथ्वी या फ़िएट क्रिएशनिज़्म को उसके सैद्धांतिक मानक के हिस्से के रूप में शामिल किया गया था। धार्मिक आधार के बारे में क्या? यह सही नहीं लगता, ठीक है? युवा पृथ्वी क्रिएशनिस्ट। बाइबल में विश्वास करने वाले, हाँ, वे हैं।

क्या कोई रूढ़िवादी धर्मशास्त्र नहीं है? हाँ। ईश्वर की सत्यता पर सवाल उठाने का यह आरोप उसके वचन में बोलने के तरीके से आता है, जिसे इन युवा पृथ्वी सृजनवादियों द्वारा व्याख्यायित किया गया है, और जिस तरह से वह अपनी दुनिया में बोलता है। यह उन्हें विरोधाभासी लगता है।

लेकिन क्या माता-पिता की कोई उम्र नहीं होती? हाँ, माता-पिता की एक उम्र होती है। उदाहरण के लिए, हमारे पहले माता-पिता के बारे में कोई सवाल ही नहीं है। जब परमेश्वर ने आदम को ज़मीन की मिट्टी से और हव्वा को आदम की बगल से बनाया था, तब वे कुछ मिनट के भी नहीं दिखते थे।

लेकिन एक प्रसिद्ध इतिहासकार, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, शायद बाद में आएगा, ने अपनी पुस्तक, द क्लोजिंग ऑफ द इवेंजेलिकल माइंड में उस समापन के दो उदाहरण दिए हैं। वह आत्म-आलोचनात्मक था। वह एक इवेंजेलिकल है।

वोल्थरस्टॉर्फ और एल्विन प्लांटिंगा जैसे कैल्विनिस्ट दार्शनिकों को शामिल किया। उन्होंने इंजीलवादी इतिहासकारों का जिक्र नहीं किया।

वह खुद को भी इसमें शामिल कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। किसी भी मामले में, उन्होंने इंजीलवादियों के बीच अच्छी विद्वता न होने के दो उदाहरण दिए। एक उदाहरण यह है कि एक तरफ बाइबिल और दूसरी तरफ अखबार के जरिए भविष्यवाणी की व्याख्या ऐसे लोगों द्वारा की जाती है जो पवित्र भूमि के भूगोल, इतिहास और वर्षों से राजनीतिक स्थिति के बारे में बहुत कम जानते हैं।

दूसरा था युवा पृथ्वी सृजनवाद, और उसने एक पंथवादी द्वारा तैयार की गई आयु संबंधी तर्क की उपस्थिति दिखाई। इसका मतलब यह नहीं है कि तर्क अपने आप में गलत है, लेकिन अधिकांश लोग इसकी उत्पत्ति नहीं जानते हैं। हाँ, आदम और हव्वा को वयस्क के रूप में बनाया गया था, लेकिन क्या हमें यह मानना चाहिए कि परमेश्वर ने पृथ्वी के रास्ते पर उन तारों से प्रकाश बनाया जो अभी तक अस्तित्व में नहीं थे? नास्तिक वैज्ञानिकों को भ्रमित करने के लिए, जिन्हें बाइबल पढ़नी चाहिए थी और पृथ्वी की आयु 10 या 12,000 वर्ष निर्धारित करनी चाहिए थी, नंबर एक, बाइबल हमें कोई आयु नहीं बताती है, लेकिन नंबर दो, कुछ लोगों को, यह परमेश्वर की सत्यता में विरोधाभास लगता है।

मुझे बाइबिल के आधार पर दृष्टिकोण डी, ईश्वरवादी विकास के साथ गंभीर समस्याएं हैं, जैसा कि हम देखेंगे। मैं सावधानीपूर्वक प्रगतिशील सृजनवाद का समर्थन करता हूँ, जबकि निश्चित रूप से युवा पृथ्वी या फिएट सृजनवादियों के लिए संगति का दाहिना हाथ बढ़ाता हूँ। मैं कहूँगा कि बहस जारी रहने दें, अध्ययन जारी रहने दें, आइए हम एक-दूसरे से प्यार करें जबकि हम इनमें से कुछ मामलों को समझने की कोशिश करते रहें।

मैं यह बताना चाहूँगा कि मिलार्ड एरिक्सन पुरानी पृथ्वी के दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं। यहाँ तक कि वेन गुडेम, जो बहुत रूढ़िवादी व्यक्ति हैं, डायनासोर के कारण, उस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। रॉबर्ट सी. न्यूमैन, एक सेवानिवृत्त न्यू टेस्टामेंट प्रोफेसर, जो क्षमाप्रार्थी में बहुत रुचि

रखते हैं, ने अपनी वेबसाइट पर बहुत अच्छी, आकर्षक जानकारी दी है, क्योंकि वे पुरानी पृथ्वी के पक्ष में तर्क देते हैं।

तो, एक बार फिर, तीन विकासवादी दृष्टिकोण: प्रकृतिवादी, ईश्वरवादी और ईश्वरवादी। वे विकासवादी हैं क्योंकि वे मानव जाति के विकासवादी दृष्टिकोण को मानते हैं। वे भिन्न हैं।

प्राकृतिक विकास अलौकिकता के विरुद्ध है और निश्चित रूप से पवित्र शास्त्र के साथ संगत नहीं है। इसी तरह, ईश्वरवादी विकास, हालांकि यह ईश्वर को सृष्टिकर्ता मानता है, बाइबिल की शिक्षा के साथ असंगत है, क्योंकि यह ईश्वर की भविष्यवाणी को नकारता है, जो दोनों नियमों में एक प्रमुख बाइबिल सिद्धांत है। ईश्वरवादी विकास विकासवादी है और फिर भी यह मानता है कि ईश्वर ने अलौकिक रूप से एक उच्च प्राइमेट को आत्मा प्रदान की, जिससे आदम का निर्माण हुआ।

मैं इससे सहमत नहीं हूँ, लेकिन मैं उन लोगों को जानने के कारण मजबूर हूँ जो प्रभु से प्रेम करते हैं और कुछ ईसाई इस दृष्टिकोण को मानते हैं। और फ़िएट और प्रगतिशील सृजनवाद, या सृजनवादी दृष्टिकोण, यह कैसे हो सकता है? वे पृथ्वी की आयु पर असहमत हैं। यह मेरे लिए सवाल नहीं है।

जो चीज़ हमें विकासवादी से सृजनवादी बनाती है, वह है हमारे पहले माता-पिता की विशेष रचना। और युवा पृथ्वी और पुरानी पृथ्वी, या प्रगतिशील सृजनवाद, दोनों ही आदम और हव्वा की विशेष रचना से सहमत हैं। आदम और हव्वा की स्थिति हमारा दूसरा विषय है।

एरिक्सन बताते हैं कि एमिल ब्रूनर, एक नाम है, जिसने सिखाया कि आदम और हव्वा ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं बल्कि प्रतीकात्मक थे। इस प्रकार, मनुष्य की सृष्टि का विवरण मानवीय शुरुआत के ऐतिहासिक रिकॉर्ड के बजाय एक तरह का दृष्टांत है। ब्रूनर एक नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्री थे।

वह कार्ल बार्थ की छाया में खड़ा था। उनके बीच एक प्रसिद्ध बहस हुई थी, और धर्मशास्त्रियों की नज़र में इतना लोकप्रिय था कि कार्ल बार्थ जर्मन में एक किताब का नाम बता सकते थे, नीन! नहीं! एमिल ब्रूनर के प्रति एक क्रोधित प्रतिक्रिया। यह सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन से संबंधित था, जिसे ब्रूनर ने पुष्टि की, लेकिन उन्होंने ऐसा अपर्याप्त भाषा में किया।

बार्थ ने उस पर छलांग लगाई और फिर सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन को गलत तरीके से नकार दिया। विडंबना यह है कि ब्रूनर ने बेहतर प्रदर्शन किया, लेकिन वह हार गया क्योंकि बार्थ ने उसे पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। वे कुछ समय के लिए बाहर हो गए।

मुझे लगता है कि बाद में उनमें सुलह हो गई, लेकिन एडॉल्फ हिटलर के एक खुला संदर्भ में, ब्रूनर ने बार्थ को जर्मनी का धार्मिक तानाशाह कहा। ओह! वैसे भी, उन दोनों ने ऐतिहासिक पतन से इनकार किया, जो बुरी खबर थी। वे दोनों यीशु में विश्वास करते थे।

मुझे इस बारे में कोई संदेह नहीं है। ब्रूनर मेरे डॉक्टर के लोगों में से एक थे। उनकी ज्ञानमीमांसा भ्रमित है, इसलिए आप कह सकते हैं कि उन्हें जो विश्वास है, उस पर विश्वास करने का अधिकार नहीं है, लेकिन उनकी पुस्तक, द मीडिएटर को पढ़ें।

यह मसीह के कार्य पर एक अद्भुत पुस्तक है। इसलिए, इसमें असंगतियाँ हैं, और कार्ल बारथ ने, उनके बारे में कहा जाए तो, बाइबल के अपने सिद्धांत से बेहतर बाइबल का उपयोग किया, और उनके शिष्यों ने बाइबल का उपयोग उस तरह से नहीं किया जैसा उन्होंने किया। चर्च व्याख्याओं से भरा हुआ है, और उनमें से बहुत कुछ अच्छा है।

उनका धर्मशास्त्र सार्वभौमिकता की ओर झुका था, जिसका उन्होंने खंडन किया, लेकिन यह प्रवृत्ति निश्चित रूप से मौजूद है। ब्रूनर बारथ की तुलना में आलोचनात्मक विचार से अधिक प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने बारथ को हमारे प्रभु के कुंवारी जन्म का जोरदार बचाव करने वाला माना, और ब्रूनर ने, उद्धारण, कुंवारी जन्म को, उद्धारण, न्यू टेस्टामेंट के पौराणिक हाशिये पर माना। बारथ और ब्रूनर ने फिर से इस पर बहस की।

इसलिए, ब्रूनर, बारथ ने ब्रूनर के बारे में कहा, अमल ब्रूनर का कुंवारी जन्म से इनकार करना एक बुरा काम है जो उनके पूरे क्राइस्टोलॉजी पर एक संदिग्ध प्रकाश डालता है, क्योंकि हमारे प्रभु ने हमें दो संकेत दिए हैं, यीशु के जीवन की शुरुआत में कुंवारी जन्म, अंत में खाली कब्र, और आप संकेतों के साथ छेड़छाड़ करने की हिम्मत नहीं कर सकते। आह, मैं इसे अकेला छोड़ दूंगा, सिवाय इसके कि उनका यह इनकार कि आदम और हव्वा ऐतिहासिक व्यक्ति थे, गलत है। ऐतिहासिक पतन से उनका इनकार गलत है।

फिर भी, उनका मानना था कि लोग पापी हैं और उन्हें उद्धारकर्ता की ज़रूरत है। मैं इस असंगति से खुश हूँ। और उनका मानना है कि यीशु ही दुनिया का एकमात्र उद्धारकर्ता है, और उद्धार पाने के लिए आपको उस पर विश्वास करना होगा।

यह सब अच्छा है, लेकिन निश्चित रूप से, उनका धर्मशास्त्र गड़बड़ है। यह सब इस तथ्य से था कि ब्रूनर ने आदम और हव्वा को ऐतिहासिक व्यक्ति मानने से इनकार किया था और सृष्टि की गणना ऐतिहासिक होने के बजाय एक प्रकार की दृष्टांतिक है। सवाल यह है कि क्या यह बाइबल की शिक्षा के साथ न्याय करता है? मेरा जवाब है नहीं।

हम मानते हैं कि सृष्टि की कहानी में प्रतीकात्मक तत्वों की मौजूदगी, जीवन का वृक्ष और अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष, इस मामले को जटिल बनाते हैं। फिर भी, मैं उन्हें वास्तविक वृक्ष मानता हूँ जिन्हें ईश्वर ने विशेष अर्थ दिया है। जीवन का वृक्ष एक तरह का संस्कार प्रतीत होता है, जो बाइबल के अंतिम दो अध्यायों में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में फिर से प्रकट होगा, और अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष हमारे पहले माता-पिता की परीक्षा का अवसर था, जिसे वे, विशेष रूप से आदम, पास करने में असफल रहे।

मैं नए नियम की गवाही को आदम और हव्वा की स्थिति के बारे में निर्णायक मानता हूँ। लूका 3 में हमारे प्रभु की वंशावली इस तरह से शुरू होती है। लूका 3, 23.

जब उसने अपना मंत्रालय शुरू किया, तब यीशु की उम्र लगभग 30 वर्ष थी, जैसा कि माना जाता है, वह यूसुफ का पुत्र था। यह मसीह के कुंवारी गर्भाधान का एक संकेत है। हेली का पुत्र, मथात

का पुत्र, और इसी तरह, श्लोक 38 तक, एनोस का पुत्र, शेत का पुत्र, आदम का पुत्र, परमेश्वर का पुत्र।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि लूका इस वंशावली में वर्णित लोगों को ऐतिहासिक व्यक्ति मानता है। आखिरकार, वह इस तथ्य को प्रदर्शित कर रहा है कि नासरत का यीशु एक वास्तविक इंसान था। इसलिए, किसी दृष्टांत में किसी व्यक्ति को ऐतिहासिक व्यक्ति मानना समझदारी नहीं है, यही कारण है कि उदाहरण के लिए ब्रूनर और अन्य लोगों ने आदम को यीशु की वंशावली में से एक माना।

1 तीमुथियुस 1, 1 तीमुथियुस 2, माफ़ करें, 11 से 15, पॉलिन का सबसे मशहूर अंश है। इस अंश पर एक पूरी किताब लिखी गई है। और मैं उन लोगों का सम्मान करूँगा जो मुझसे असहमत हैं और उस किताब के आधार से सहमत हैं, जो चर्च के पद, यानी एल्डर्स के पद को पुरुषों तक सीमित करता है।

1 तीमुथियुस 2:11 से 15. मैं ईएसवी का उपयोग कर रहा हूँ। एक महिला को पूरी तरह से आज्ञाकारिता के साथ चुपचाप सीखने दो।

मैं किसी स्त्री को किसी पुरुष को सिखाने या उस पर अधिकार जताने की अनुमति नहीं देता। बल्कि उसे चुप रहना चाहिए, क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था, फिर हव्वा को।

और आदम को धोखा नहीं दिया गया था, लेकिन महिला को धोखा दिया गया और वह अपराधी बन गई। फिर भी अगर वे आत्म-संयम के साथ विश्वास और प्रेम और पवित्रता में बने रहें तो वह संतान पैदा करने के माध्यम से बच जाएगी। इस अंश में, प्रेरित पौलुस तर्क देता है कि महिलाओं को चर्च में शिक्षण और शासक पदों से बाहर रखा गया है।

वह अपने पक्ष के लिए आधार के रूप में ये तथ्य देता है कि, एक, आदम को पहले ईश्वर ने बनाया था न कि हव्वा ने, और दो, हव्वा को धोखा दिया गया था न कि आदम ने। अगर पॉल यहूदी दंतकथाओं का जिक्र कर रहा होता तो इस तर्क में क्या दम होता? वैसे, कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है, हार्वर्ड के डीन क्रिस्टर स्टेंडाहल द्वारा प्रसिद्ध, जो महिलाओं के समन्वय के लिए तर्क दे रहे हैं, कि जिस तरह से नया नियम दासता का समर्थन करता है, उसी तरह यह घर और चर्च में पुरुषों के मुखियापन के अधीन महिलाओं के इस पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण का समर्थन करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक शानदार विद्वान हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी पुस्तक का बहुत प्रभाव था, लेकिन इसमें एक महत्वपूर्ण धार्मिक बिंदु छूट गया है। यह सच है कि पॉल ने रोमन साम्राज्य की पहली सदी में मौजूद गुलामी के बारे में बात की थी।

यह भी सच है कि फिलेमोन जैसी किताब में उसने ऐसे सिद्धांत सिखाए जो अंततः ईसाईयों को गुलामी को खत्म करने के लिए अपील करते हैं, लेकिन फिर भी, इसने गुलामों को अपने स्वामियों से दूर भागने या स्वामियों को अपने दासों को मुक्त करने के लिए नहीं कहा। लेकिन 1 तीमुथियुस 2 में महिलाओं की भूमिका के बारे में पॉल के दृष्टिकोण और इस मामले में चर्च में अंतर यह है कि

गुलामी के अंश, मैं उन्हें कहूंगा, सृजन और मुक्ति पर आधारित नहीं हैं। महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में अंश उस तरह से बहुत आधारित हैं।

यहाँ जैसा कि हमने देखा, आदम पहले बना और फिर हव्वा, हव्वा को धोखा दिया गया था न कि आदम को। इफिसियों 5 में, होम पैसेज में पुरुष प्रधानता यह मोचन है जो कि धार्मिक बिंदु है जिस पर पॉल मसीह की पुष्टि करने के लिए अपील करता है, पुरुष को महिला का मुखिया मानता है, क्योंकि मसीह अपने चर्च का मुखिया है, और पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहती हैं, जैसे कि चर्च मसीह के अधीन है। यह मसीह के बारे में बात करता है, जिसने चर्च से प्यार किया और उसके लिए खुद को दे दिया।

इसलिए, मैं कह रहा हूँ कि दासों और महिलाओं की भूमिकाओं को नए नियम की शिक्षाओं में समान नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि पूर्व एक सामाजिक प्रथा है जिसे बाइबल ने तुरंत संबोधित नहीं किया, हालाँकि इसने ऐसे सिद्धांत दिए जो अंततः इसे पलट देते हैं। लेकिन इसने दासता को सृजन और छुटकारे में आधार नहीं बनाया, जो बाइबल घर और चर्च में महिलाओं की भूमिका के लिए करती है। अभी मुख्य बिंदु यह है कि, यदि पॉल दृष्टांतों या दंतकथाओं का उल्लेख कर रहा है, तो उसके पहले पत्र के अध्याय 2 में तीमुथियुस को दिए गए तर्क में इसकी क्या ताकत होगी? रोमियों 5 और 1 कुरिन्थियों 15 में आदम-मसीह समानांतर के पॉल के उपयोग सबसे अधिक विश्वसनीय हैं।

आइए हम उन अंशों पर नज़र डालें। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, मूल पाप पर बाइबल का मुख्य अंश रोमियों 5:12 से 21 है। मैं सीधे 18 और 19 पर जा रहा हूँ।

इसलिए, जैसे एक अपराध सभी मनुष्यों के लिए दण्ड का कारण बना, वैसे ही धार्मिकता का एक कार्य सभी मनुष्यों के लिए औचित्य और जीवन का कारण बनता है। वह दो प्रमुखों के नाम नहीं दोहराता, लेकिन स्पष्ट रूप से यह आदम और मसीह है। मुझे नहीं पता कि रोमियों पर मेरे पास कितनी टिप्पणियाँ हैं, शायद एक दर्जन।

मैं बहुतों को नहीं जानता। हर कोई इसे स्वीकार करता है। इसी तरह, 19, क्योंकि एक आदमी की अवज्ञा से, स्पष्ट रूप से आदम की अवज्ञा से, बहुतों को पापी बना दिया गया।

इसी प्रकार एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता, अर्थात् मसीह की आज्ञाकारिता से, बहुत से लोग धर्मी ठहराए जाएँगे। पद 14 में कहा गया है कि आदम उस व्यक्ति का प्रकार था जो आने वाला था। फिर से, मैं इस बहुत ही महत्वपूर्ण मूल पाप मार्ग में पद दर पद जाने वाला हूँ।

लेकिन अभी के लिए, आदम और मसीह यीशु वहाँ हैं। उस एक व्यक्ति, मसीह यीशु का अनुग्रह, बहुतों के लिए भरपूर हुआ, आयत 15। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पौलुस आदम और मसीह के बारे में बात कर रहा है।

क्या उनका तर्क सही साबित होगा यदि आदम सिर्फ एक काल्पनिक पात्र है? उदाहरण के लिए, अमीर आदमी और लाज़र के दृष्टांत में, लाज़र को उसके अलावा किसी और रूप में इस्तेमाल नहीं किया गया है जैसे कि वह कोई ऐतिहासिक व्यक्ति हो क्योंकि वह ऐसा नहीं है। वह एक

दृष्टांतीय व्यक्ति है, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। इसी तरह, 1 कुरिन्थियों 15:21 और 22 दो आदमों के बारे में शास्त्रीय छंद हैं।

पद 20, लेकिन वास्तव में, मसीह को मृतकों में से जीवित किया गया है। पिछले आठ पदों में, पॉल, बहुत ईमानदारी से, उन दो चीजों में से एक है जो मुझे 21 वर्षीय बाइबल पढ़ने के रूप में प्रभु के पास ले आई। एक था त्रिएकत्व का सिद्धांत।

बेशक, मैंने पहले भी त्रिएकत्व के बारे में सुना था, क्योंकि मैं चर्च जाता था। लेकिन अब मैंने इसे पॉल में हर जगह देखा। और मुझे लगा कि किसी ने इसे गढ़ा नहीं है।

यह एक बहुत ही खराब सिद्धांत होगा जिसे गढ़ा जा सकता है क्योंकि यह बहुत रहस्यमय है। दूसरी बात यह थी कि 1 कुरिन्थियों 15:12 से 19 में परमेश्वर की ईमानदारी, वास्तव में सार्वजनिक रूप से चिंतन करने के लिए, यदि आप चाहें, तो इस पत्र में, यदि मसीह नहीं जी उठे होते तो क्या प्राप्त होता। कुरिन्थियों को भ्रम हुआ।

वास्तव में, वे यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने पर विश्वास करते थे, लेकिन उन्हें शरीर के पुनरुत्थान की अवधारणा को समझने में समस्या हो रही थी। क्योंकि वे जो कर रहे थे, वह यह था कि सड़ते हुए शरीर, मृत शरीर, लाशों को देखकर, उन्होंने उसका अनुमान लगाया और सोचा, ओह, आज की हमारी भाषा का उपयोग करें, क्या भगवान लाशों को जीवित करने जा रहे हैं? वे बस इसकी कल्पना नहीं कर सकते थे। जैसा कि पॉल ने यहाँ अपने विचारों को विकसित किया है, मुख्य विचार परिवर्तन है।

जैसे कि परमेश्वर अपने प्राकृतिक संसार में फूल और अन्य चीजें लेता है और पौधे लगाता है और उन्हें रूपांतरित करता है, वैसे ही आप जो बीज बोते हैं वह उस फूल या पौधे जैसा नहीं दिखता जो उगता है। इसी तरह, जो शरीर दफनाया जाएगा वह बहुत अलग होगा। यह वही शरीर होगा, यह व्यक्तिगत पहचान और निरंतरता होगी, लेकिन यह एक शानदार, अमर, अविनाशी, शक्तिशाली, शानदार शरीर होगा, यहाँ तक कि आध्यात्मिक भी, जिस पर पवित्र आत्मा का प्रभुत्व है।

किसी भी मामले में, श्लोक 20, लेकिन वास्तव में, 1 कुरिन्थियों 15, इस बात पर विचार करने के बाद कि अगर यीशु को नहीं उठाया जाता तो क्या होता, मूल रूप से ईसाई धर्म ध्वस्त हो जाता। हम अभी भी अपने पापों में होंगे। प्रेरित झूठे होंगे क्योंकि उन्होंने गवाही दी थी कि परमेश्वर ने मसीह को उठाया था और इसी तरह की अन्य बातें।

जो लोग मर गए हैं, वे नष्ट हो गए होंगे। लेकिन वास्तव में, मसीह को मृतकों में से जीवित किया गया है। यह उनकी पुष्टि है।

जो लोग सो गए हैं, उनका पहला फल। यीशु हमारा आदर्श है। जैसे वह जी उठा था, वैसे ही वह जी उठेगा।

अब, इसमें बहुत बड़ा अंतर है। प्रोटोटाइप हमारा भगवान और उद्धारकर्ता है। वह मदद करेगा।

उसका पुनरुत्थान हमारे पुनरुत्थान का कारण है। क्योंकि जैसे एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, अर्थात् आदम, वैसे ही एक मनुष्य के द्वारा मरे हुआ का पुनरुत्थान भी आया, अर्थात् मसीह। यहाँ, नामों का उपयोग किया गया है, 1 कुरिन्थियों 15:22।

क्योंकि जैसे आदम में सभी मरते हैं, वैसे ही मसीह में सभी जिलाए जाएँगे। आदम मृत्यु लाया। मसीह जीवन लाता है।

पुनरुत्थान अध्याय का नाम सही है। रोमियों 5 और 1 कुरिन्थियों 15 में आदम-मसीह के समानांतर का पॉल द्वारा किया गया उपयोग सबसे अधिक विश्वसनीय है। प्रेरित यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के छुटकारे-ऐतिहासिक महत्व के लिए तर्क देता है।

वह कितना मूर्ख होता अगर वह अपने मामले को एक अनैतिहासिक व्यक्ति के आधार पर रखता? यदि पौलुस के तर्क के आधार झूठे होते तो क्या मसीह के कार्य के प्रभाव पर सवाल नहीं उठाया जाता? क्योंकि जिस प्रकार एक मनुष्य की अवज्ञा के कारण बहुत से लोग धर्मी ठहराए गए, उसी प्रकार एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के कारण बहुत से लोग धर्मी ठहराए जाएँगे। रोमियों 5:19. क्या यह सच होता यदि आदम मानवजाति के लिए मात्र एक प्रतीक होता और कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं होता? मुझे नहीं लगता।

जिस तरह से नया नियम आदम और हव्वा के बारे में बात करता है, उसके कारण मैं उन्हें उत्पत्ति 1 और 2 में ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में मानने के लिए बाध्य हूँ। इसने मुझे आदम और हव्वा, पहले पुरुष और पहली महिला की ऐतिहासिकता की पुष्टि करने के रूप में स्थापित किया। मानव जाति की उत्पत्ति के बारे में हमारे अलग-अलग विचारों पर वापस आते हुए, मैंने कहा कि मैं ईश्वरवादी विकास पर वापस लौटूंगा और वास्तव में, इसे अस्वीकार करूंगा। ऐसा करने का समय आ गया है।

क्या आदम को पहले से मौजूद किसी प्राणी से बनाया गया था? तीन ईसाई विकल्पों में से, यानी ईसाइयों द्वारा रखे गए विकल्प, फ़िएट या युवा पृथ्वी सृजनवाद, ईश्वरवादी विकास, और प्रगतिशील या पुरानी पृथ्वी सृजनवाद। केवल दो सृजनवादी दृष्टिकोण ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। नहीं, आदम को पहले से मौजूद किसी प्राइमेट से नहीं बनाया गया था।

जबकि ईश्वरवादी विकासवाद सकारात्मक उत्तर देगा, हाँ, वह था। उत्पत्ति 2, 7, और 3, 19 की हिब्रू व्याख्या के आधार पर यह प्रश्न आसानी से हल हो जाता है। उत्पत्ति 1 परमेश्वर के रचनात्मक कार्य का अवलोकन देता है, जबकि उत्पत्ति 2 विशेष रूप से मनुष्य के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।

उत्पत्ति 1:26 से 29 में परमेश्वर के संकल्प के बारे में बताया गया है कि वह मनुष्य को बनाएगा और उसे अन्य प्राणियों पर प्रभुत्व देगा। उत्पत्ति 1:26 से 29 में, फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपनी छवि के अनुसार बनाएँ और उन्हें समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर प्रभुत्व दें। यह परमेश्वर का संकल्प है।

इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। परमेश्वर के स्वरूप में, उसने उसे बनाया, नर और नारी, उसने उन्हें बनाया। और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनसे कहा, फलो-फूलो और पृथ्वी को भर दो और उस पर अधिकार करो और समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।

और इसलिए, पाठ आगे बढ़ता है। परमेश्वर ने अपनी योजना के अनुसार पुरुष और स्त्री को बनाया, श्लोक 27। परमेश्वर ने पहले जोड़े को आशीर्वाद दिया, उन्हें बच्चे पैदा करने और पृथ्वी को भरने के लिए कहा, और उन्हें बाकी सृष्टि पर प्रभुत्व दिया, श्लोक 28 और 29।

उत्पत्ति 2 में इस बारे में अधिक विस्तार से बताया गया है कि परमेश्वर ने हमारे प्रथम माता-पिता को कैसे बनाया। हम उत्पत्ति 2:7, ESV की व्याख्या के साथ आगे बढ़ते हैं। तब यही परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से मनुष्य को बनाया और उसके नथुनों में जीवन की साँस फूँकी, और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।

अब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। यत्सर शब्द का अर्थ है रूप या फैशन। बी.डी.बी., ब्राउन, ड्राइवर, ब्रिग्स *डिक्शनरी, लेक्सिकॉन* 427।

इसका उपयोग मानव कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए करते हैं। यहाँ इसका उपयोग निश्चित रूप से ईश्वर के लिए किया गया है। शब्दकोश से पता चलता है कि एक दिव्य कुम्हार मनुष्य को बनाता है।

यह एक अच्छा सुझाव लगता है जब हम उस सामग्री पर विचार करते हैं जिससे उसने पहला मनुष्य बनाया। परमेश्वर ने दूर का इस्तेमाल किया, जो सूखी धरती या धूल है, शब्दकोश 779। शब्दकोश आगे कहता है कि इस शब्द का इस्तेमाल, उद्धरण, विशेष रूप से मानव शरीर की सामग्री के रूप में किया जाता है, उद्धरण बंद करें, और यह उत्पत्ति 2, 7 और 319 है।

ईश्वर, दिव्य कुम्हार ने सूखी मिट्टी या धूल से एक मनुष्य, एक मानव प्राणी को गढ़ा, उद्धरण, जमीन से, उद्धरण बंद करें। एरिक्सन दिखाते हैं कि कैसे कुछ आस्तिक विकासवादियों ने दावा किया है कि उत्पत्ति 2:7 में धूल प्रतीकात्मक है। वे इस आधार पर तर्क देते हैं कि यह पाठ मनुष्य के निर्माण में ईश्वर द्वारा पहले से मौजूद जानवर का उपयोग करने की उनकी अवधारणा के साथ फिट बैठता है।

मुझे 2:7 में धूल के स्पष्ट अर्थ से, 2:7 के स्पष्ट अर्थ से, और 3:19 में धूल के उपयोग से यह अनुचित लगता है। उस पाठ में, भगवान ने आदम को उसके पाप के लिए शाप दिया, उद्धरण, आपके चेहरे के पसीने से, नाक चेहरे के लिए खड़ा है। हम कहेंगे आपके माथे के पसीने से, आप तब तक खाना खाएंगे जब तक आप वापस नहीं लौटते, सर्वनाम प्रत्यय के साथ क्रियात्मक निर्माण, जब तक आप जमीन पर वापस नहीं लौटते, क्योंकि इससे, आपको लिया गया था, शुद्ध और इसलिए निष्क्रिय, क्योंकि आप धूल हैं और धूल में आप वापस लौट आएं एक करीबी उद्धरण।

यहाँ धूल का मतलब पहले से मौजूद प्राणी से नहीं है। मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया गया था, और मृत्यु के समय उसका शरीर सड़ जाता है और मिट्टी में मिल जाता है। इसलिए, मैं निष्कर्ष निकालता हूँ कि उत्पत्ति 2:7 मनुष्य को धरती से परमेश्वर की एक विशेष रचना के रूप में प्रस्तुत करता है।

यहाँ ईश्वरवादी विकास के लिए कोई जगह नहीं है। हवा भी ईश्वर की एक विशेष रचना है। उत्पत्ति 2:20बी से 22 एनआईवी रिकॉर्ड, उद्धरण, लेकिन आदम के लिए कोई उपयुक्त सहायक नहीं मिला।

इसलिए, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को नींद में डाल दिया, और जब वह सो रहा था, तो उसने मनुष्य की एक पसली ली और उस जगह को मांस से बंद कर दिया। फिर प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य की पसली से एक स्त्री बनाई, और उसे मनुष्य के पास ले आया, उद्धरण बंद करें। ईश्वरवादी विकास भी उत्पत्ति 2 और 7 के बाकी हिस्सों से संबंधित है। हम पढ़ते हैं, उद्धरण, और उसने, परमेश्वर ने, उसके नथुने में जीवन की सांस फूँकी और मनुष्य एक नेफेश हयाह बन गया।

बी.डी.बी. इस अभिव्यक्ति के अर्थ के रूप में एक जीवित, जीवित, साँस लेने वाला जानवर देता है, 6, 5, 9, और नोट करता है कि इसका उपयोग जानवरों के लिए भी किया जाता है। यह सही है। भगवान के रचनात्मक कार्य के आधार पर, जानवरों को 1:20 और 1:24 में जीवित प्राणी कहा जाता है।

1:30 में कहा गया है कि भूमि, वायु और समुद्री जीवों में जीवन की सांस है। इसलिए, जैसा कि मुझे लगता है कि बिरखॉफ कहते हैं, यह कहना ठीक नहीं होगा कि आदम को ईश्वर द्वारा दी गई सांस उसे आत्मा प्रदान कर रही थी। यह सही नहीं है।

क्या आदम के पास आत्मा है? हाँ। क्या इस कहानी का केंद्रबिंदु यही है? नहीं। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने उसे सजीव किया।

उसने उसे जीवित किया। इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य को लिया जिसे उसने भूमि की मिट्टी से बनाया था और उसमें जीवन की सांस फूँकी, और वह एक जीवित, साँस लेने वाला प्राणी बन गया। उत्पत्ति 2:7 में शब्द बन गया भी महत्वपूर्ण है।

पाठ यहाँ पहले से मौजूद प्राणी की आस्तिक विकासवादी अवधारणा की अनुमति नहीं देगा। मनुष्य ईश्वर द्वारा उसमें साँस डाले जाने के परिणामस्वरूप एक जीवित प्राणी बन गया। यह दावा करना ठीक नहीं होगा कि ईश्वर द्वारा साँस लेना एक जीवित प्राइमेट में आत्मा का संचार था।

मनुष्य तब तक जीवित नहीं था जब तक कि परमेश्वर ने उसके नथुने में साँस नहीं फूँकी। वह परमेश्वर के कार्य के कारण ही जीवित प्राणी बना, ठीक वैसे ही जैसे पशु भी परमेश्वर की ओर से जीवन की साँस के कारण जीवित प्राणी हैं। इस प्रकार मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि उत्पत्ति 2:7 की व्याख्या मनुष्य की शुरुआत के बारे में ईश्वरवादी विकासवादी दृष्टिकोण को रोकती है।

मनुष्य परमेश्वर की एक विशेष रचना थी, जिसने अपनी रचना के लिए कच्चे माल के रूप में ज़मीन से केवल ढीली मिट्टी का उपयोग किया। आदम के लिए एक शरीर को आकार देने के बाद, परमेश्वर ने उसके नथुनों में जीवन की साँस फूँकी। इसका परिणाम यह हुआ कि आदम एक जीवित, साँस लेने वाला प्राणी बन गया, जो वह पहले नहीं था।

भगवान ने जानवरों को भी जीवन की साँस दी, लेकिन भगवान को सीधे उनके सामने साँस लेते हुए नहीं दिखाया गया है, जैसा कि आदम के साथ दिखाया गया है। इस प्रकार भगवान द्वारा अपने सर्वोच्च प्राणी, मनुष्य की रचना में एक अंतरंगता मौजूद है, जो जानवरों की रचना में नहीं है। यह अंतरंगता मनुष्य और भगवान की बाकी रचनाओं के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर का सुझाव देती है।

यह मानवता में ईश्वर की छवि का विषय है जो उस अंतर को स्पष्ट करता है जिस पर हम अगले व्याख्यान में अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र संख्या तीन है, मानवता की उत्पत्ति, पाँच दृष्टिकोण।